जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

# राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 29 संख्याः 187 प्रभात उदयपुर, बुधवार 11 मई, 2022 आर.जे. 7202 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

*पालतू बनाए गए घोड़ों की सबसे पुरानी किस्म अख़ाल टेके को सहनशक्ति और रफ्तार के लिए विकसित किया गया था। यह विश्व की सबसे दुर्लभ और बेहद प्राचीन नस्ल है, जिसका हजारों साल पुराना इतिहास है। माना जाता है कि इनके व अरबी घोड़ों के पूर्वज एक ही थे। सन् 1881 में जब तुर्कमेनिस्तान रुसी साम्राज्य का अंग बना, उसके बाद वहां अख़ाल टेके के अधिकृत प्रजनन केन्द्र स्थापित किये गए। इस प्रजाति को अख़ाल ओएसिस (नखलिस्तान) के पास रहने वाले "टेके" लोगों के नाम पर अख़ाल टेके नाम दिया गया। सोवियत रुस के शुरुआती अशांत दिनों में इस प्रजाति को भी बहुत संघर्ष करना पड़ा, जिससे इनकी संख्या कम हो गई। अमेरिका में पहली बार 1978 में इनका आगमन हुआ। छरहरे शरीर के कारण ग्रे हाउण्ड जैसे दिखने वाले इन घोड़ों का कद 56 इंच से 64 इंच तक होता है और वजन 900 से 1000 पाउण्ड। तुर्कमेनिस्तान के खानाबदोश कबीले माल परिवहन के साथ-साथ लूटमार के लिए भी अख़ाल टेके घोड़ों का इस्तेमाल करते थे। इन्हीं लोगों ने इस नस्ल को तेज रफ्तार व फुर्ती के लिए विकसित किया। रुस में तो अख़ाल टेके स्टेटस सिम्बल हैं। इन्हें हॉर्स रेसिंग की दुनिया में बहुत पसंद किया जाता है। सत्रहवीं तथा अठारहवीं सदी में 200 से ज्यादा विशुद्ध अख़ाल टेके घोड़े प्रजनन के लिए ग्रेट ब्रिटेन भेजे गए थे। आधुनिक रेस के घोड़ों में इनके जीन्स का भी योगदान है। अख़ाल टेके की सबसे बड़ी खासियत है इनका शांत स्वभाव और स्वामीभक्ति। ये मालिक की मुद्रा या हल्के से इशारे से ही समझ जाते हैं कि उनका मालिक क्या चाहता है। रेगिस्तान में विकसित होने के कारण ये घोड़े बहुत थोड़े में गुजारा कर लेते हैं। तथापि, आनुवांशिक विविधता नहीं होने से इन्हें कई तरह के रोग होने का खतरा है। ये घोड़े तुर्कमेनिस्तान का राष्ट्रीय प्रतीक हैं। वहां सेना की वर्दी, मुद्रा और स्टाम्प तथा कई स्मारकों पर इनकी छवि देखी जा सकती है। सबसे लोकप्रिय अख़ाल टेके घोड़ा, जिसका नाम "एबसैन्ट" था, ने 1960 के ओलम्पिक में स्वर्ण पदक जीता था। उसके बाद के दो अन्य ओलम्पिक में भी उसने पदक जीते थे। एबसैंट की संतानें भी उसी की तरह माहिर थीं। बहुत कठिन हालात में रहने की आदी यह नस्ल किसी भी मौसम-जलवायु में पनप सकती है।*

# 'पार्टी खड़ी करने की दृष्टि से मैं अडवानी को सबसे बड़ा राजनीतिज्ञ मानता हूँ''

## प्रशांत किशोर ने यह भी कहा कि, भाजपा का वोट-शेयर राष्ट्रीय स्तर पर 40 प्रतिशत है, दस दशकों तक भाजपा का दबदबा रहेगा देश की राजनीति में

- यह पूछे जाने पर कि, कौन सी पार्टी भाजपा को चुनौती दे सकती है, कांग्रेस या आप, पी.के. ने बिना आंख झपकाये तपाक से कहा, ''कांग्रेस''।
- पी.के. का यह भी मानना है कि, भाजपा की सबसे बड़ी ताकत है, उसका संगठन। जिसका नवीनतम उदाहरण है, यू.पी. आदि राज्यों में उसके वोट शेयर में कुछ भी कमी नहीं आयी, हालांकि, कोविड की महामारी के दौरान सरकार के कामकाज में काफी कमियां सामने आयीं थीं।
- पी.के. प्र.मंत्री मोदी के शासन की सबसे बड़ी उपलब्धि, विदेश में भारत की छवि व दबदबा बढ़ने को मानते हैं।
- पी.के. का यह भी मानना है कि, कांग्रेस के बढ़ने के रास्ते में सबसे बड़ी रूकावट, उसका यह सोच है कि, कई दशकों शासन करने के बाद वो ही जानती है कि, सुचारू सरकार कैसे चलायी जाती है। जब तक यह सोच नहीं बदलेगा, पार्टी आगे नहीं बढ़ सकती।
- पी.के. के अनुसार जनता क्या चाहती है, यह जनता के बीच जाने से ही मालूम होता है, दिल्ली या पटना में बैठकर यह ज्ञान व सच्चाई हासिल नहीं होती।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 मई। वयोवृद्ध भाजपा नेता लालकृष्ण अडवाणी को एक तरह से भुला दिया गया है तथा वह पहले ही पृष्ठभूमि में जा चुके हैं लेकिन राजनीतिक रणनीतिकार एवं अब तक आकांक्षी राजनीतिक कार्यकर्ता प्रशांत किशोर का मानना है कि एल.के. अडवाणी देश के सर्वाधिक काबिले तारीफ एवं जीवित प्रभावी राजनेता हैं।

आडावणी ने समूची पार्टी को खड़ा किया जो एक राजनीतिक ताकत बनी और अन्ततः सत्ता में आई। भाजपा का राष्ट्रीय वोट शेयर करीब 40 प्रतिशत है जो कि अगले कुछ वर्षों तक बेजान नहीं होगा। वास्तव में किशोर के लिए इस शैली में ऑल टाइम ग्रेट "गांधी" हैं।

किशोर का मानना है कि भाजपा एक ऐसी स्थिति में पहुंच चुकी है जिसमें वह उसी तरह से प्रभुत्वशाली राजनीतिक पार्टी बनी रहेगी जैसी की कभी कांग्रेस थी। वह इण्डियन एक्सप्रैस ग्रुप की ओर से आयोजित एक वैब संवाद के दौरान वृहद् राजनीतिक मुद्दों और संभावनाओं पर बोल रहे थे।

लेकिन, इसके साथ ही उन्होंने भारत की सत्तारूढ़ पार्टी के संभावित विपक्ष को भी कमतर नहीं आंका। ऐसे देश में जहां 600 मिलियन लोग एक दिन में सौ रूपए भी नहीं कमाते, वहां वंचना और क्रोध का जबर्दस्त भाव होगा, किन्तु चुनावों में इन भावनाओं को स्पष्ट नहीं किया जाता।

उन्होंने महसूस किया कि भाजपा की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसका संगठन है। यह संगठन भावनात्मक समर्थन को चुनावों में वोटों में तब्दील कर सकता है। एक क्षण के लिए विचार कीजिए कि कोविड महामारी के दौरान लोगों की पीड़ाओं और सरकार की विफलताओं के बावजूद पार्टी का वोट शेयर प्रभावित नहीं हुआ।

इससे विपक्ष की विफलता का भी पता चला। वह इन कमियों का फायदा उठाकर वोट नहीं जुटा सका। विपक्ष सरकार की विफलताओं को लोगों को समझाने में विफल रहा। यह मुख्यरूप से कांग्रेस पार्टी की विफलता और इसे वोटों में तब्दील करने की उसकी अक्षमता थी।

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# चीन की "वैक्सीन डिप्लोमैसी" बुरी तरह फेल हुई

## चीन में निर्मित वैक्सीन की बिक्री में 97 प्रतिशत की गिरावट आयी

- शंघाई, बीजिंग व चीन के कई भागों में कोविड-19 के मरीज़ों की संख्या में हुई भारी वृद्धि इस बात का सबूत है कि, डैल्टा व ओमिक्रॉन वायरस के खिलाफ चीन में निर्मित वैक्सीन असफल रही है।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 मई। यह मामला तख्तापलट की एक ऐसी कोशिश का है जो विफल हो गई। डेल्टा और ओमिक्रॉन वायरस के वैश्विक प्रसार के चरम पर चीन ने जो वैक्सीन कूटनीति अपनाई थी, उसे उसके वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं।

कोविड के अत्यधिक संक्रामक ओमिक्रॉन वेरिएंट के विरूद्ध सुरक्षा प्रदान करने में अमेरिकी और यूरोपीय उत्पादों की तुलना में कमजोर सुरक्षा प्रदान करने के कारण चीन द्वारा निर्मित कोविड-19 वैक्सीन्स का निर्यात बहुत कम हो गए हैं।

चीन की वैक्सीन्स की प्रभावोत्पादकता में कमी शंघाई, बीजिंग और शेष चीन में कोविड-19 केसों की तीव्र बढ़ोतरी से सिद्ध हो गई है।

विदेश नीति के विशेषज्ञ इस घटनाक्रम को चीन की वैक्सीन कूटनीति की विफलता के रूप में देखते हैं। इस कूटनीति के तहत बीजिंग ने विकासशील देशों पर दबाव डाला कि वे वैक्सीन के बदले में ताइवान जैसे मुद्दों पर उसके रूख का समर्थन करें। फरवरी 2021 में दक्षिण अफ्रीका के देश गुयाना ने पहले तो यह घोषणा की कि उसने चीन की वैक्सीन्स का डोनेशन स्वीकार कर लिया है, उसके बाद उसने उस समझौते को रद्द गर दिया जिसके तहत गुयाना में ताइवान का जनप्रतिनिधि दफ्तर खोला जाना था।

यूनिसेफ के अनुसार सिनोफॉर्म, सिनोवैक बायोटैक और कैन्सिनो बायोलॉजिक्स ने पिछले अप्रैल माह में वैक्सीन के कुल 6.78 मिलियन डोज़ निर्यात किए थे, लेकिन यह आंकड़ा करोना के सितम्बर 2021 के चरम समय से 97 प्रतिशत कम था।

न्यूज एजेंसी निक्केई एशिया ने डालियान (चीन) और टोक्यो से खबर दी है कि इसमें वे वैक्सीन्स भी शामिल हैं जिसमें बॉटलिंग जैसी कुछ उत्पादन प्रक्रियाएं विदेशों में की गईं।

इस बीच फायज़र और जर्मनी के बायोएनटैक द्वारा संयुक्त रूप से विकसित की गई वैक्सीन के 55.69 मिलियन डोज़ अप्रैल में निर्यात किए गए जो कि सितम्बर के बाद से 71 प्रतिशत कम थे लेकिन चीन की वैक्सीन्स के निर्यात में आठ गुना अधिक थे। मॉडर्ना की वैक्सीन का निर्यात 57 प्रतिशत गिरकर 16.49 मिलियन रह गया।

यू.के. की रिसर्च कम्पनी एयरफिनिटी के अनुसार यदि चीन की वैक्सीन्स को पहली या दूसरी बार किया गया है तब भी उनके तीसरे बूस्टर डोज़ की मांग बहुत कम रह गई है। चीन वैक्सीन का पहला डोज़ लगने के बाद उसके बूस्टर डोज़ की मांग पाकिस्तान में 98 प्रतिशत, इण्डोनेशिया में 93 प्रतिशत, बांग्लादेश में 92 प्रतिशत और ब्राजील में 74 प्रतिशत कम हो गई है। बीजिंग स्थित ब्रिज कन्सल्टिंग का कहना है कि ब्राजील और इण्डोनेशिया ने चीनी वैक्सीन्स के अनुबंध रिन्यू नहीं किए। ये अनुबंध पिछले साल एक्सपायर हो गए थे।

वर्ष 2020 में अंत के समय में जब अमेरिका और यूरोपीय दवा निर्माताओं ने कोविड-19 वैक्सीन्स का बाजारीकरण शुरू कर दिया था, चीन उसके पहले ही वैक्सीन निर्यात में

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# ताईवान ने कोविड नीति बदली

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 मई। जहां बीजिंग ने करोना वायरस को समाप्त कर देने के लिये अपने प्रयास दोगुने कर दिये हैं, वहीं ताईवान सरकार ने घोषणा कर दी है कि ताईवान अब करोना वायरस को समाप्त करने के बजाय "वायरस के साथ जीने" की तरफ बढ़ेगा तथा साथ ही "आपदा की तीव्रता में कमी

- नीति बदलने का मुख्य कारण है, सरकार द्वारा यह स्वीकार करना कि, ओमिक्रॉन वायरस फैलता बहुत तीव्र गति से है, पर इतना खतरनाक नहीं है।

लायेगा।"

केसों की संख्या के बढ़ने के बावजूद, ताईवान अब हल्के तथा असिम्प्टोमैटिक संक्रमण वाले लोगों को अस्पतालों में भर्ती होने के बजाय, घरों पर ही आइसोलेट होने की अनुमति दे रहा है। सरकार विदेशों से आने वाले लोगों को जितने दिन क्वारंटीन रहना

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# "खालिस्तानी" समर्थक होने का आरोप पीछा नहीं छोड़ रहा आप का

- हिमाचल की विधानसभा की दीवारों पर पोते गये खालिस्तान समर्थक नारों तथा पाकिस्तान से आये ड्रोन व हथियारों के जखीरे का पकड़ा जाना, आप को छवि सुधारने का मौका ही नहीं दे रहा।

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 मई। अरविन्द केजरीवाल की आप के "खलिस्तान - समर्थक" होने के आरोपों से उसका पीछा नहीं छूट रहा हैं इस साल पंजाब में हुई पार्टी की जीत से तो यह आरोप और तीव्र हो चुका प्रतीत हो रहा है।

कुछ घटनाओं, जैसे- पटियाला में शिव सेना और खालिस्तान-समर्थक गुटों के बीच हुई झड़पों, और उसके बाद करनाल में चार खालिस्तानी आतंकियों की गिरफ्तारी के बाद, स्वर्गीय जरनैल सिंह भिंडरवाला -पूजक पोस्टर और बैनर धर्मशाला-स्थित हिमाचल विधानसभा भवन के परकोटे पर लगे हुये पाये गये, जहाँ साल में एक विधानसभा सत्र आयोजित हुआ करता है। ये पोस्टर इस चुनावाधीन राज्य में हुई केजरीवाल की रैली के थोड़ी देर बाद जानकारी में आये थे। हिमाचल प्रदेश में सिखों की जनसंख्या कुल जनसंख्या का 1 प्रतिशत है। इसलिये खालिस्तानी तत्वों के साथ आम आदमी पार्टी (आप) के जुड़ाव का आम सोच इस साल के अन्त में होने वाले विधानसभा चुनाव में पार्टी की संभावनाओं को नुकसान ही पहुँचा सकता है। धर्मशाला की इस घटना से सत्तारूढ़ भाजपा को राष्ट्रवाद की बहस को तेज करने तथा कथित खालिस्तानी जुड़ावों को लेकर आप को घेरने का अवसर मिल गया है। आप को अपने इन नेताओं के बयानों से कोई मदद नहीं मिली है, जैसे आप हिमाचल सोशल मीडिया के संयोजक हरप्रीत सिंह बेदी खालिस्तान पर जनमत संग्रह की माँग करने वाले एक आतंकी गुट के समर्थन में बोले थे। बेदी पार्टी से निष्कासित कर दिये गये हैं। इस बीच, जयराम ठाकुर सरकार ने एक साथ कई कदम उठाये हैं। धर्मशाला की घटना की जाँच के लिये स्पेशल इन्वेस्टीगेटिंग टीम गठित कर दी गई है, राज्य की सीमाएं सील कर दी गई हैं तथा "सिख्स फॉर जस्टिस" नामक एक संगठन के गुरपतवन्त सिंह पन्नू के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज कर दी गई है। पिछले सप्ताहों में, पंजाब में आतंक-संबंधी घटनाएं बढ़ी हैं, भारतीय क्षेत्र में पाकिस्तानी ड्रोन देखे गये हैं तथा हथियारों का गुप्त जखीरा बरामद हुआ है। जहाँ इन सब कारणों से, भाजपा नेताओं के लिए इन खालिस्तानी गतिविधियों के लिये आप पर दोषारोपण करना आसान हो गया है, वहीं केन्द्र सरकार तथा हिमाचल सरकार भी धर्मशाला की घटना के लिये दोषारोपण के अपने हिस्से से बच नहीं सकते।

## 4 बच्चे डूबे

जोधपुर, 10 मई (कासं)। जोधपुर शहर के निकटवर्ती कालीबेरी स्थित पत्थर की खान में भरे पानी में डूबने से चार बच्चों की दर्दनाक मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने गोताखोरों की मदद से चारों बच्चों के शव निकलवाए।

- पत्थर की खान में डूबने से चार बच्चों की दर्दनाक मौत हो गई, परिवार के लोग पड़ौस में शादी में व्यस्त थे, इस दौरान हादसा हो गया। मुख्यमंत्री ने घटना पर दुख जताया।

दोपहर में शवों का पोस्टमार्टम करवाया गया। चारों बच्चें सोमवार की दोपहर से घर से निकले हुए थे। परिवार के लोग मोहल्ले में चल रही शादी समारोह में व्यस्त थे। इधर दोपहर में जिला कलैक्टर हिमांशु गुप्ता भी एमजीएच मोर्चरी पर पहुंचे और मृतक बच्चों के परिजनों से बात कर उन्हें ढांढस बंधाया। घटना को लेकर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने दुःख

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# गुजरात में आदिवासी युवाओं को मोहने के लिये राहुल ने मंच से बार-बार जिग्नेश मेवानी का उदाहरण दिया

## राहुल गांधी ने गुजरात की पूर्वा-पट्टी में ट्राइबल्स की सभा को संबोधित किया

- जैसा कि विदित ही है, पूर्वा पट्टी की चालीस सीटों में 27 सीटें ट्राइबल्स के लिये आरक्षित हैं।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 मई। आगामी विधानसभा चुनावों में पार्टी का चुनावी संभावनाओं में उछाल लाने की दृढ़ कोशिश के अन्तर्गत, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने आज युवाओं, खासतौर से आदिवासी समुदाय के युवाओं का आव्हान किया कि वे "अधिकारों के लिये किये जाने वाले संघर्ष" में आगे आयें। गांधी ने उन्हें दलित ऐक्टिविस्ट विधायक जिग्नेश मेवानी की मिसाल दी।

कांग्रेस पार्टी के "आदिवासी सत्याग्रह" का श्रीगणेश करते हुये, कांग्रेस नेता ने आदिवासियों से कहा कि वे बडगाँव-विधायक जिग्नेश मेवानी की भाजपा के खिलाफ चल रही "निडर लड़ाई" से प्रेरणा लें।

कांग्रेस द्वारा शुरु किये गये इस सत्याग्रह का उद्देश्य राज्य आदिवासी क्षेत्र-पूर्वा पट्टी के आदिवासियों का समर्थन हासिल करना है। इस आदिवासी-बैल्ट से गुजरात विधानसभा के 40 विधायक चुनकर आते हैं। गांधी ने आदिवासियों को यह "गारंटी" भी दी कि अगर चुनावों के बाद कांग्रेस सत्ता में आई तो पार्टी पार तापी नर्मदा नदी प्रोजेक्ट को रद्द कर देगी।

गांधी, इस आंदोलन की लॉचिंग के लिये दाहोद आये थे, ने गुजरात की आदिवासी सीटों के कांग्रेसी विधायकों तथा अन्य आदिवासी नेताओं के साथ मीटिंग की, जिसमें पार्टी की आगामी रणनीति पर चर्चा हुई। पूर्वा पट्टी की 40 में से 27 सीटें आदिवासियों के उम्मीदवारों के लिये आरक्षित हैं।

गुजरात प्रदेश कांग्रेस कमेटी के नेताओं, जिनमें कार्यकारी अध्यक्ष हार्दिक पटेल भी शामिल हैं, के साथ मंच पर बैठे राहुल गांधी ने जिग्नेश मेवानी को भी मंच पर बिठाया, जिन्होंने पूर्व पार्टी अध्यक्ष के साथ संयुक्त रूप से सत्याग्रह की शुरुआत की।

राहुल ने कहा, "बिरसा मुंडा बहुत पहले ही रास्ता दिखा गये हैं, संघर्ष का समय आ गया है। आदिवासी युवाओं को कांग्रेस में शामिल होकर कड़ी मेहनत करनी होगी। विरोध-प्रदर्शन करने वालों पर होने वाली सरकार की कार्यवाही से डरिये मत। जिग्नेश यहाँ बैठे हैं। गुजरात ऐसा अकेला राज्य है जहाँ आंदोलन एवं विरोध-प्रदर्शन के लिये अनुमति लेना जरूरी है। उन्होंने (सरकार) ने बिना अनुमति लिये विरोध-प्रदर्शन करने पर तीन महीने के कारावास की सजा दी थी, लेकिन मैं उन्हें जानता हूँ। आप (सरकार) उन्हें 10 साल की सजा दे दे, लेकिन इससे उन पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा और न उनमें कोई परिवर्तन होगा।

गुजरात के युवा इस बात को समझते हैं, इसलिये मैं आप से कह रहा हूँ कि हमें एक नये गुजरात का निर्माण करना है। अगर आप शिक्षा एवं चिकित्सा की माँग करेंगे, तो वे (सरकार) आपको नहीं देंगे। वे आपके भविष्य को अरबपतियों के हाथों बेच देना चाहते हैं। आप लोग किसी भी जाति के हों, युवाओं को आगे आना ही है।

कांग्रेस और मैं 24 घंटे आपके साथ हैं। हम जनतो के पुराने मॉडल, अमूल मॉडल को सरकार चलाने के लिये गुजरात में वापस लाना चाहते हैं।"

"चुनिंदा अरबपतियों" की मदद करने के लिये भाजपा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर प्रहार करते हुये, गांधी ने कहा, "मोदी 2014 में प्रधानमंत्री बने थे। एक मुख्यमंत्री के रूप में, उन्होंने जो कुछ गुजरात में शुरु किया था, वहीं सब अब प्रधानमंत्री के रूप में भारत में कर रहे हैं। गुजरात मॉडल के अनुरूप ही, आज दो भारत हैं। एक भारत धनवानों पसंदीदा लोगों, अरबपतियों, अफसरशाहों का है, जिनके पास सत्ता है, धन है तथा अकड़ एवं घमंड है। दूसरा भारत आम जनता का भारत है। कांग्रेस एक हिन्दुस्तान चाहती है जिसमें सबसे लिये सम्मान हो, सबके लिए अवसर हों, सबके लिये शिक्षा हो, तथा सबके लिए चिकित्सा सुविधा हों। प्रधानमंत्री ने नोटबंदी की थी। उन्होंने आपकी जेबों से तो आपका पैसा निकाल लिया था लेकिन काला धन कम नहीं कर सके।

## वीर तेजाजी

जोधपुर, 10 मई (कासं)। यहां कुछ असामाजिक तत्वों ने डांगियावास के सालवांकलां गांव के पास वीर तेजाजी की प्रतिमा पर रात में कालिख लगा दी। आज सुबह इसका पता लगने पर जाट समाज के लोग एकत्र हो गए और आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग करने लगे। लोगों के जमावड़े की सूचना

- जोधपुर के पास एक गांव में वीर तेजाजी की प्रतिमा पर कालिख पोतने की घटना सामने आई, इस हरकत से जाट समाज भारी गुस्से में है।

पर पुलिस के आलाधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे और समझाइश की। पुलिस ने आरोपियों को शीघ्र गिरफ्तार करने का आश्वासन दिया है।

पुलिस ने बताया कि सुबह सूचना मिली कि डांगियावास के सालवांकलां गांव की सरहद में जाट समाज के आराध्य वीर तेजाजी की मूर्ति पर

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )